ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 104-105

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

महिलाओं पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

1. शिवानी सारस्वत
2 डॉ0 मुकेश शर्मा

1. शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, बी.एस.ए. कॉलेज, मथुरा सम्बद्ध डॉ. भीमराव आ.वि.वि. आगरा (उ0प्र0) भारत

Received-19.01.2023, Revised-25.01.2023, Accepted-30.01.2023 E-mail: peetambrask@gmail.com

सारांशः ***भारत कृषि प्रधान देश है अर्थात् जहाँ अधिकांश जन संख्या कृषि पर ही निर्भर हैं। यहाँ प्राचीन काल से यही धारणा है कि पुरुषों का दर्जा सदैव स्त्रियों से ऊँचा ही रहता है। ऐसे में यह माना जाता है कि महिलाएं सरल व मधुर स्वभाव की होती है तो उनके कार्य भी सरल होते हैं। वो शिक्षा में भी कला के प्रति रुचि रखती हैं तथा विज्ञान और यान्त्रिकी जैसे विषय महिलाओं के लिए बने ही नहीं है। तो ऐसे में सूचना और संचार तकनीकी के ज्ञान की कल्पना महिलाओं से करना व्यर्थ है, परन्तु आधुनिकीकरण ने इस अवधारणा को गलत साबित कर दिया है। आज की महिलाएं सूचना एवं संचार तकनीकी के माध्यम से आगे भी बढ़ रही है और प्रगति भी कर रही है, पर जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार सूचना एवं संचार तकनीकी का महिलाओं पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभाव देखने को मिल रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– भारत कृषि प्रधान, जन संख्या, प्राचीन काल, मधुर स्वभाव, कला, विज्ञान और यान्त्रिकी, संचार, तकनीकी ।

आज के वर्तमान युग में कोई भी कार्य आसानी से किया जा सकता है। जिसका मुख्यतः श्रेय सूचना तकनीकी को जाता है, परन्तु जैसे प्राचीन काल से चला आ रहा है कि भारत पुरुष प्रधान देश है। वहाँ अभी भी स्त्रियों के लिए यही धारणा है कि वह पुरुषों की बात माने, घर के कार्य करे और यदि शिक्षा की बात आये तो उन्हें शिक्षा की क्या जरूरत क्योंकि करने तो उन्हें घरेलू कार्य ही हैं और यदि जैसे–तैसे किसी महिला को पढ़ने की स्वतन्त्रता मिल भी गयी तो उन्हें कला जैसे सरल विषय ही दिलाये जाते हैं। लोगों की मान्यता है कि महिलाएं स्वभाव से विनम्र व सरल हैं, तो उनके लिए विज्ञान और यान्त्रिकी जैसे विषय नहीं हैं। इसी धारणा को सूचना तकनीकी ने काफी हद तक प्रभावित किया है। आज महिलाएं भी घर बैठे–बैठे अपनी रुचि अनुसार कार्य कर सकती हैं चाहे वो पढ़ाई हो, घरेलू कार्य या कृषि कार्य, आज सूचना तकनीकी ने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को भी काफी हद तक प्रभावित किया है।

जिनेवा 2003 के विश्व सम्मेलन में IIC को महिला सशक्तिकरण को एक उपकरण के रूप में माना गया है।

भारतीय धर्मशास्त्र के अनुसार महिलाओं को अर्धांगिनी के रूप में परिभाषित किया गया है अर्थात् महिलाओं को कोई स्वतन्त्रता नहीं थी। ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में भी देखा जाता है। वर्तमान में सूचना तकनीकी के पदार्पण से यह दृश्य पूरी तरह बदल चुका है। सूचना तकनीकी के प्रारम्भिक अवस्था में अन्य क्षेत्रों की भाँति इस क्षेत्र में भी पुरुषों ने अपनी प्रधानता को बनाए रखा था, लेकिन कम्प्यूटर और मोबाइल फोन एवं इन्टरनेट के विकास ने धीरे–धीरे वर्चस्व और प्रधानता वादी स्थिति को बदलना प्रारम्भ कर दिया। अब बहुत संख्या में पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं केवल कम्प्यूटर के क्षेत्र में ही बल्कि डेटा प्रोसेगिंग, नेटवर्किंग, दूरसंचार, बैंकिग षिक्षा एवं तकनीक आधारित सेवाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है।

सूचना तकनीकी का अर्थ– सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी शब्द अंग्रेजी भाषा के तीन शब्दों का संगठित स्वरूप हैं। I = Information, + C= Communication, + T = Technology शब्द सूचना, खबर) से है। Communication शब्द संचार या सम्प्रेषण व Technology शब्द तकनीकी से।

सूचना तकनीकी का महत्व– "महिलाओं पर सूचना तकनीकी का प्रभाव" पर अनेक शोध हुए, परन्तु फिर भी सूचना तकनीकी ने महिलाओं पर जो प्रभाव डाला वो काफी सकारात्मक है। सूचना तकनीकी ने न केवल महिलाओं के किसी एक पक्ष को प्रभावित किया बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा रोजगार, यातायात, खेती में सूचना तकनीकी सभी पक्षों पर अपनी छाप छोड़ी है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं की भूमिका में आने वाले अभिनव परिवर्तनों और संवैधानिक मजबूती को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को इण्डिया शाइनिंग वुमैन के रूप में देखना होगा, क्योंकि आज का आधुनिक युग तकनीकी युग है। आज महिलाओं के लिए तकनीकी ने नये–नये रास्ते खोले हैं, परन्तु फिर भी अनेकों महिलाएं इस तकनीकी के प्रयोग से वंचित रह जाती हैं। यही कारणों को जानने के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है कि क्या बाधाएं हैं तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने महिलाओं के किन–किन पक्षों पर जोर दिया है, क्योंकि यदि महिलाओं तक सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान पहुँचेगा तभी हमारा विकासशील देश भी विकसित देशों की श्रेणी में पहुँच सकेगा।

साहित्य समीक्षा– मारहन मार्टिन– 1998 में कहा कि इन्टरनेट के प्रारम्भिक समय से ही उस पर पुरुष वर्ग का प्रभुत्व रहा है, परन्तु आज के वर्तमान युग की छवि कुछ परिवर्तित सी दिखायी दे रही है। जिसमें कि महिलाओं और लड़कियों की

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

संख्या इन्टरनेट के क्षेत्र में काफी बड़ी है तथा इसका मानना है कि समाज की प्रगति तथा विकास के लिए इस संख्या में बढ़ोत्तरी में निरन्तरता बनी रहनी चाहिए।

वेडली– 2000 में अपना अध्ययन तमिलनाडु के करीमपुर के एक ब्राह्मण परिवार को देखने का प्रयास किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि उस परिवार की चार पीढ़ियों की जीवन शैली, आर्थिक स्थिति और आवश्यकताओं में बहुत अधिक विभिन्नता है। इन्होंने तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से ज्ञात किया कि दादी, नानी की उपेक्षा नई पीढ़ी की महिलाओं के पास अधिक साथ है, क्योंकि वह अपना दैनिक कार्य मशीन द्वारा सम्पन्न करती हैं।

पिल्लई और शान्ता (2008)– अपनी पुस्तक "आई.सी.टी.' एण्ड एम्पावरमेन्ट प्रोमोशन अमंग पूअर वमैन : हाव केन वी मैक इट हैपन? सम रिप्लेक्शन ऑन के ..... एक्सपीरियन्स" में यह जानने का प्रयास किया कि सूचना एवं संचार तकनीकी किस रूप में महिलाओं के रोजगार को बढ़ा रही है। इन्होंने अपना अध्ययन केरला में सम्पन्न किया।

बापन विश्वास और नसरीन बानू (2022)– "भारत में ग्रामीण और शहरी महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण : एक तुलनात्मक अध्ययन" के अन्तर्गत ग्रामीण और शहरी महिलाओं के कार्य के अन्तर को दर्शाया गया है तथा उनकी गतिविधियाों को भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार से विपरीत है।

सुनीत सिंह, अरेन्द्र सिंह (13.5.2022)– ने अपने आर्टिकल "सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका" के अन्तर्गत यह बताने का प्रयास किया कि प्रारम्भ से ही पुरुषों और महिलाओं का कार्य बँटा था। महिलाओं को इन्टरनेट से दूर घरेलू कार्य में रखा जाता था, जबकि पुरुषों को ये सभी अधिकार प्राप्त थे।

बेनर्जी एवं मित्तर (1998)– ने बताया कि महिलाओं के कार्य जल्दी सम्पन्न हो जाते थे, क्योंकि वे मशीनों द्वारा किये जाते थे। महिलाओं में लचीलेंपन का अभाव होता है। जिसका मुख्य कारण पितृसत्तात्मक परम्परा है, क्योंकि समाज में प्रारम्भ से ही यह अवधारणा है कि महिलाओं में टेक्नोलॉजी की समझ नहीं होती।

उद्देश्यः– 1) ग्रामीण महिलाओं पर सूचना तकनीकी से पढ़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।
2) ग्रामीण महिलाओं पर सूचना तकनीकी से पढ़ने वाले सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध विधि– "प्रस्तुत शोध अध्ययन महिलाओं पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव" के अध्ययन के लिए द्वितीयक समकों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत– पुस्तक, अखबार, डायरी एवं इन्टरनेट आदि को शामिल किया गया है। जो प्राथमिक समकों के एकदम विपरीत होता है।

निष्कर्ष– सूचना तकनीकी ने महिलाओं के स्तर को उठाने में काफी सहायता की है। आज महिलाएं सभी क्षेत्रों में चाहे वो सामाजिक हो या राजनैतिक हो, हर जगह अपनी जगह बनायी हैं। आज महिलाओं को सूचना तकनीकी ने वो स्थान दिलाया है, जिनकी वो हकदार हैं। आज महिलाएं पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। जो सूचना तकनीकी की ही देन है। महिलाओं के ज्ञान को पहले सीमित रखा जाता था, परन्तु वर्तमान में महिलाओं के ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत है वो जो चाहे कर सकती है, सीख सकती है बिना किसी की सहायता के और यह सब सिर्फ सूचना प्रौद्योगिकी, इन्टरनेट के द्वारा ही सम्भव है और वह वक्त दूर नहीं कि जब महिलाएं पुरुषों के बराबर या उनसे आगे निकल जाएं, परन्तु जरूरी यह है कि उन्हें सूचना तकनीकी के सही अर्थ का ज्ञान हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, सुनीत, अरेन्द्र – "सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका" In Journal of advance and Scholar Research in Sllied Education.
2. कुमारी, ममता, (Nov 2015) Volume. "सूचना एवं तकनीकी क्रान्ति का पिछड़ी जाति पर महिला पर प्रभाव"।
3. विश्वास, बापन, बानू नसरीन (2022).
4. पिल्लई और शान्ता (2008) "आई.टी.सी. एण्ड एम्पावरमेन्ट प्रोमोशन अमंग पुअर वुमैन"।
5. जिनेवा 2003, के "आई.टी.सी. महिलाओं के सषक्तीकरण के शक्तिशाली उपकरण के रूप में"।
6. रानी, चंचल (15 जनवरी, 2017) "सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण के सन्दर्भ में" बीकानेर।
7. सुरेश, लाल (2011) "भारत में महिला सशक्तिकरण पर सूचना और संचार तकनीकी का प्रभाव"।
8. अनिल, मुकेजन (2017) "स्मार्ट गांव को विकसित करने में एडवांस तकनीकी का उपयोग"।
9. सरिता राठी (2015) "महिला सशक्तिकरण आई.टी.सी. की भूमिका मंगल, यादव (13 अगस्त, 2022) कम्प्यूटर सखी अभियान।

*****